International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in July 2024, ISSN -2393-8048

# रामचरित मानस में संस्कृति निर्माण

डॉ. अवि सुखीजा, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, ग्रामोत्थान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, संगरिया

## प्रस्तावित शोध की भूमिका

तुलसी ने जिस समाज में जन्म लिया, जिन परिस्थितियों को झेला, उनसे उनकी वैचारिक मनःस्थिति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और आगे चलकर इसी से उनकी रचना धर्मित का स्वरूप और उनकी समाज को देखने की दृष्टि निर्धारित हुयी ।

विचार परिवेश में कल्पना और तर्क के सहयोग से मनुष्य अपनी समस्याओं को हल करने में विचार का प्रयोग करता है। यदि मनोविज्ञान का आश्रय लिया जाय तो विचार वह प्रक्रिया है जिसमें हम पुराने अनुभव को वर्तमान समस्याओं के हल करने के काम में लगाते हैं। और इस परिभाषा की दृष्टि से विचार की पहुँच वर्तमान काल के साथ साथ भूतकाल और भविष्यकाल तक होती है।

विचार में एक गुण पाया जाता है कि – विचार उस लक्ष्य की प्राप्ति में या समस्या के समाधान में हमारी सहायता करते हैं। समाधानों के उपायों की खोज होने लगती है। तत्पश्चात् पूर्व निरीक्षित और पूर्व परीक्षित अनुभवों की स्मृतियाँ हमारे मस्तिष्क में कौंधने लगती हैं। अतः स्पष्ट है कि समस्या की उपस्थिति की दशा में साहित्य में विचार की भी वही प्रक्रिया है जो व्यवहारिक जगत में सामान्य रुप से अपनाई जाती है।

अन्तः संबंध के प्रश्न – विचार के संबंध में एक विदेशी विद्वान और एक हिन्दी साहित्य के अप्रतिम आलोचक का कथन द्रष्टव्य है :

"महान साहित्य में सुन्दर शब्द चाहिए तो महान विचार और महान् संवेदन भी चाहिए।"

तात्पर्य यह है कि भाषा संस्कार को प्रदर्शित करने वाले सुन्दर शब्द आस्वाद के पक्ष को तभी संबल और सार्थक करते हैं जबकि वे उदात्त विचार के साथ संवेदन को भी सन्निहित करें।

आचार्य शुक्ल का कथन है– कितने गहरे, ऊँचे विचारों के साथ हमारे किसी भाव या मनोविचार का संयोग कराया जा सका है, कितने भव्य और विशाल तथ्यों तक हमारा हृदय पहुँचाया जा सका है, इसका विचार भी कवियों की उच्चता स्थिर करने में बराबर करना पड़ेगा।

यहाँ भी विचार का भाव के साथ संयोग की स्थिति एवं विशाल तथ्य तक पाठक के हृदय के विस्तार को श्रेष्ठ काव्य के लिए जरूरी बताया गया है। 'पड़ेगा' पर पड़ने वाला बल इस तथ्य की अनिवार्यता का द्योतक है।

जहाँ कहीं भी और जब कभी भी कविता में ज्ञान का प्रवेश देखा गया है वहाँ और उस समय वह कर्म प्रेरक बनकर ही आया है। यह कर्म प्रेरणा की प्रवृत्ति की सोद्देश्यता जब भी आई है स्वान्तः सुखाय के रूप में ही आई है अर्थात कवि के निजी व्यक्तित्व को चेतना का अंग बनकर ही ज्ञान प्रतिफलित हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास ऐसे ही कवि माने गए हैं और यह बात उन सभी तुलसी विचारों पर लागू होती है जो लोकमंगल की भावना से प्रभावित हैं।

उनका रामचरितमानस तो स्वान्तः सुखाय लिखा गया है किन्तु उनका यह स्वान्तः सुखाय क्या सर्वजन सुखाय। यदि विचार करके देखा जाए तो रामचरित मानस के आधार पर तुलसीदास के विचार चर्चा करें तो दो प्रकार की विचार की शाखाएं मिलेगी।

1) आध्यात्मिक विचार भूमि
2) भौतिक विचार भूमि

तुलसी दास मध्यकालीन सामंती समाज की उपज थे। उनका युग धर्मप्राण युग था और इसलिए उनके रामचरितमानस पर धर्म, दर्शन, नैतिकता, आचार विचार आदि की गहरी छाप है। उन्होंने अपने रामचरितमानस में साहित्य धर्म, लोकाचार, समाज व्यवस्था, न्याय, स्वभाव, गुण आदि की चर्चा की है और यहीं उनकी ऊची नीची विचार भूमियाँ है जहाँ हम उनकी अद्भुत क्षमता, कारयित्री प्रतिभा और साहित्यिक सामर्थ्य की झलक पाते हैं। यदि हम उनकी धार्मिक विचार भूमि की चर्चा करें तो दो रूपों में दिखलाई पडती है – साधारण धार्मिक विचार भूमि और वर्णाश्रम धार्मिक विचार भूमि।

तुलसी एक विशेष कवि, मार्गदर्शक और लोकसंग्रह कर्त्ता के रूप में खड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं और इसी भूमि पर स्थिर रहते हुए वे अपने जीवन दर्शन को व्यक्त करते हैं, अपनी समाजिक दृष्टि को रेखांकित करते हैं क्योंकि यह विचार भूमि विशेष भूमि है और यहाँ वर्णाश्रम धर्म के सारे नियम लागू होते हैं और लोगों को उन्हीं नियमों के अनुसार आचरण करना पड़ता है।

**प्रस्तावित शोध का महत्त्व**

दशरथ के आंगन में, कौशल्या की गोद में, विश्वामित्र के आश्रम में, जनक की यज्ञशाला में,

ऋषियों महर्षियों के सान्निध्य में, सबरी की झोपड़ी में, अहिल्या के शाप में, जटायु के दाह संस्कार में, सुग्रीव की सहायता में, रावण के बध में, विभीषण के राज तिलक में। कहाँ नही हैं राम? वे परात्पर ब्रह्म हैं फिर भी नरलीला कर रहें हैं। इसी आधार पर तुलसी ने आम जनता में विश्वास पैदा किया और संदेश दिया कि राम दुर्लभ नहीं हैं, दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए।

तुलसी ने परंपरा से बहुत कुछ लिया है अपने मन के प्रबोध के लिए या फिर आत्मसुख के लिए और प्रकारान्तर से लोककल्याण के लिए जो अपनी विशिष्ट विचारधारा निर्मित की जो कि उनके काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त हुयी, वह विलक्षण है, विशिष्ट है और कल्पनातीत भी। दर्शन के गूढ़तम तत्वों को जिस सरल किन्तु उदात्त भाषा में गोस्वामी जी ने व्याख्यायित किया है वह आश्चर्यजनक है। उनका रामचरितमानस दर्शन का महासागर है जिसमें अनेक रत्न हैं और भक्त तथा संत समाज सदा से उन रत्नों को अपनी क्षमता, सीमा और शक्ति के अनुसार चुँगता रहेगा। तुलसी सदैव प्रासंगिक, सार्थक और प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

**प्रस्तावित शोध के सोपान**

ब्राह्मण के साथ शूद्र का समन्वय, अद्वैत के साथ द्वैत का, सगुण के साथ निर्गुण का, ज्ञान के साथ भक्ति का, लोक के साथ शास्त्र का ध्यान के साथ उपासना का, नर के साथ नारायण का, राजा के साथ प्रजा का, कर्म के साथ धर्म का अभूतपूर्व समन्वय उनकी विचारधारा में देखने को मिलता है। गोस्वामी जी का दृढ़ विचार था कि मुक्ति का अधिकारी वही हो सकता है जिसमें अपने इष्ट (राम) के प्रति अविचल आस्था हो, जो काम, क्रोध, मदु लोभ, मोह, मत्सर, माया आदि दुर्गुणों से मुक्त हो, जिसमें विनय हो, श्रृद्धा हो, क्षमा हो और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव हो। उसे अपनी लघुता का और प्रभु की प्रभुता की पहचान हो।

**प्रस्तावित शोध के उद्देश्य**

1. गोस्वामी जी ने माया के अस्तित्व को स्वीकार किया है किन्तु उन्होने माया के दो भेद भी बताए हैं :– विद्या माया और अविद्या माया।
2. भक्ति द्वारा ईश्वर कृपा को प्राप्त कर जीव स्वतंत्रता और चौतन्यता का अनुभव कर सकता है।
3. गोस्वामी जी को ज्ञान और भक्ति दोनो स्वीकार है किन्तु पलड़ा भक्ति का ही भारी है।
4. गोस्वामी तुलसी जी का मानना है कि जीवात्मा पूर्ण ब्रह्म श्रीराम के प्रति अपना पूर्ण समर्पण प्रदर्शित करती है तो उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

**प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष**

काव्य विचार नहीं होता किन्तु काव्य में विचार होते हैं। ये विचार ही सैद्धान्तिक रुप लेकर विचारधारा में परिवर्तित हो जाते हैं जिसे हमे कवि का जीवन दर्शन भी कहते हैं। दर्शन के संबंध में अन्यत्र चर्चा की जा चुकी हैं। इस संदर्भ में केवल इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि कवि जब अपने सम्पूर्ण विचार समूहों को समेट कर किसी रचना की सर्जना करता है तब उसके ये विचार समूह विचारधारा का रुप ले लेते हैं। तुलसीदास का रामचरितमानस कई विचार धाराओं का संगम है सांस्कृतिक विचारधारा, आध्यात्मिक विचारधारा, सामाजिक विचारधारा, नैतिकविचारधारा, आर्थिक विचारधारा, राजनीतिक विचारधारा इत्यादि। इन विचारधाराओं की चर्चा कहीं न कहीं इस प्रबंध में की गयी है।
इसीलिए इन विचार धाराओं की विस्तृत चर्चा इस स्थल पर विशेष प्रयोजन मूलक नहीं लगती। मैंने इन विचारधाराओं को सिर्फ दो भागों में विभक्त किया है। ईश्वर, जीव, माया, जीव आदि की मैंने आध्यात्मिक विचारधारा के अन्दर समेट लिया है और राजा– प्रजा, पिता पुत्र, भाई बहन, गुरु शिष्य, शत्रु मित्र, घर परिवार, आदि के संबंधो को लेकर गोस्वामी जी जो विचार व्यक्त किए हैं उन्हे सामाजिक विचार धारा में रखा गया है। यदि उन दोनों विचार धाराओं का सम्यक अध्ययन कर लिया जाय तो हम तुलसी की विचारधारा से संबंधित अनेक जिज्ञासाओं को शान्त कर सकते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


| | | |
|---|---|---|
| रामचरितमानस | : | गोस्वामी तुलसीदास, चौरानबेवां संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर |
| कवितावली | : | गोस्वामी तुलसीदास, बत्तीसवां संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर। |
| विनय पत्रिका | : | गोस्वामी तुलसीदास, सम्पादक, श्री वियोगी हरि, गीता प्रेस, गोरखपुर, द्वितीय संस्करण, प्रकाशक–सत्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली। |
| गीतावली | : | गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, इक्कीसवां संस्करण, सम्वत् 2059 |
| दोहावली | : | गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, चालीसवां संस्करण। |
| श्रीमद्भगवद्गीताः | | गीता प्रेस, गोरखपुर, एक सौ चौगीसवां संस्करण, सम्वत्2056 |